

३५ अंतिम भाग ३५

ASHA ARCHIVES

3260	
------	--

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री कालिकायै नमः ॥ ॥ उल्लसद्गुजवंदरेवे
 दिनी भरिदुःख भवप्रोति भेदिनी ॥ कण्ठलम्बितकपालमालिका मंगलं प्र
 म करोतु कालिका ॥ १ ॥ शोशितादृगजचर्मवासिनी मन्त्रभैरवमहाद्य
 हासिनी दैत्यवाहकृतकांक्षालिका मंगलं प्रम करोतु कालिका ॥ २ ॥
 मेरुमन्दरसुविध्यवासिनी संस्मृतासिदुरितौघनाशिनी याद्विजेति
 त्तुलैकुमारिका मंगलं प्रम करोतु कालिका ॥ ३ ॥ चण्डपुरावधके
 लिकारिकारक्तवीजरणदर्यहारिका कायकान्तिजितमेघमालिका

या ४

मंगलं प्रम करोतु कालिका ॥ ४ ॥ याश्रुतिस्मृतिपुराणप्रणिनी का
 उकोचवरभूलदंष्टिनी वृक्षविनमरसिप्रालिका मंगलं प्रम करो
 तु कालिका ॥ ५ ॥ आदिशक्तिरप्रलासनातनी संस्मृतासिगिरिकूट
 वासिनी याहि प्रौद्यप्रवनेकुमारिका मंगलं प्रम करोतु कालिका ॥ ६ ॥
 रजसेसकलसर्गसर्जने सात्त्विकीवज्रगतां सुलक्ष्मीं नामसिंहगजै
 दन्तरालिका मंगलं प्रम करोतु कालिका ॥ ७ ॥ भक्तिनमुमुत्रियक्षदे
 वतासिद्धकिन्नरसमूहसेविता शुभदैत्यप्रकारन्दलोलिका मंगलं

जग ३

ममकरोतु कालिका ॥ ८ ॥ कालिका पूरक प्रिदं रमणीयं कालिदासकविना
सुनिर्मितं । संधयोः पठति यो हि मनुष्यो जन्मदुःखप्रखिलं स जहाति ॥ ८ ॥
इति श्री कालिदासकविविरचितं कालिका पूरकं समाप्तम् ॥ सं २५ कावत
अभूति जं निराकारं दध्यं षड्रसदर्जितं । वरकस्य प्रमाणोतु वद वैद्यकि
मौघधमा ॥ ९ ॥ नारायणं भजेति भावार्थः ॥